बकलमखुद १

भारत में जासूसी साहित्य और इसकी आवश्यकता

आप मुझे इस शीर्षक का क्रम बदलने के लिये अनुमति दें तो अपनी बात मैं अधिक आसानी से कह सकूंगा— मैं पहले आवश्यकता की चर्चा करना चाहता हूँ।

साधारण श्रमिक से लेकर बीते युग के राजा बादशाहों तक में एक स्वाभाविक इच्छा रही है। कुछ देर के लिये वास्तविक जगत से अलग कहीं दूर चले जाने की। भूत-प्रेत, जिन्न चुड़ैलों के किस्से, बैताल कथाएं, अलफलैला की कहानियां आदि व्यक्ति की उसी इच्छा से सम्बन्धित हैं जो बचपन में नानी और दादी की परिकथाओं से आरम्भ होकर जवानी में चौपाल के अलाव पर, झोंपड़ी और हवेलियों मे, सर्दियों की रातों में कही सुनी जाती रहीं हैं।

छापे का युग आया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भी अपने राजकाज के लिये कुछ साक्षर व्यक्तियों की आवश्यकता थी। काशी के अथवा काशी परम्परा के पण्डित देववाणी संस्कृत ही जानते थे और वह देववाणी जनता के लिये श्रद्धा की तो चीज थी समझने की चीज नहीं थी। कम्पनी ने कुछ लोगों को नौकर रक्खा और उन्होंने जनता को विशेषकर युवा और प्रौढ़ जनता को साक्षर करने के लिए प्रचलित प्रेम कथाओं और रहस्य-

कथाओं को प्रकाशित कराया। सर्वविदित बात है कि रहस्य कथाएँ अधिक चलीं — तब से लेकर आज तक भी किस्सा हातिमताई, बैताल पच्चीसी, आदि अधिक चलती हैं किस्सा तोतामैना अपेक्षा-कृत कम।

तो यथार्थ से अलग रहस्य और रोमांच की कहानियाँ आम जनता की पसन्द हैं और इसीलिए इनके सृजन से अर्थ लाभ भी हो सकता है हिन्दी में यह समझा पहले-पहल देवकी नन्दन खत्री ने। श्रद्धालु व्यक्तियों से क्षमायाचना सहित मैं यह कहना चाहूंगा कि महर्षि दयानन्द हिन्दी के बहुत बड़े प्रचारक थे, परन्त देवकी नन्दन खत्री उनसे भी बड़े प्रचारक साबित हुए। आर्य समाज मत मानने वालों ने सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू अनुवाद करा लिया। परन्तु खत्री परिवार बहत दिन तक अपनी अड पर अड़ा रहा और 'चन्द्रकान्ता' 'चन्द्रकान्ता सन्तति' पढ़ने के लिये लोगों को हिन्दी सीखनी पड़ी।

रहस्य, रोमांच, कौतूहल और जासूसी साहित्य वास्तव में यह एक ही विद्या है जो जमाने के साथ-साथ अपना लेबिल बदलती रही है। जसे देवकीनन्दन खत्री के जासूस ऐयार कहलाते थे और उनके लिए काल्पनिक तिलिस्मों की समस्याएँ थीं। परन्तु देवकी नन्दन खत्री के पुत्र दुर्गाप्रसाद खत्री के ऐयार जासूस कहलाए और उनके सम्मुख समस्या थी आतंकवादी आन्दोलन से ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा की, नौकरी अंग्रेज की, लेकिन मन भारतीय। युग विज्ञान का और वैज्ञानिक का। भारतीय जासूसी साहित्य के लिये यह गौरव की बात है कि उस साहित्य को ब्रिटिश युग में जन्म होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

चूंकि यह विद्या आम जनता की पसन्द है और इसका सुबूत यह है कि इसके प्रकाशक बिना सरकारी खरीद के भी अपना गुजारा चला लेते हैं– तो इस एतिहासिक टिप्पणी के बाद मैं

यह कहना चाहूंगा कि जासूसी उपन्यास गर्मियों की दोपहरी के लिये, जाड़ों की लम्बी रातों के लिये शरबत अथवा चाय की भाँति ही जनता के एक बड़े वर्ग की आवश्यकता है।

अब पहली बात पर बात करें—

देवकी नन्दन खत्री की सफलता से प्रभावित होकर जहाँ उनके पुत्र दुर्गाप्रसाद खत्री ने इस विद्या को कुछ यथार्थ का पुट देकर आधुनिक विज्ञान सम्मत जासूसी उपन्यासों की रचना की वहां उनके दूसरे पुत्र परमानन्द खत्री ने विदेशों में प्रचलित टार्जन के किस्से तथा अन्य रोमांचक साहित्य का हिन्दी अनुवाद किया।

फिर कलकत्ता, बनारस, और इलाहाबाद से विदेशी अनुवादों की बाढ़ आ गई। कुछ नाम मुझे अब भी याद हैं— जानन डायल, एडगर एलन पो, तथा राबर्ट और सैक्सटन ब्लैक सीरीज जो सम्भवतः प्रकाशक द्वारा रजिस्टर्ड सीरीज के अन्तर्गत बहुत से गुमनाम लेखकों ने लिखी। सन् ३८ से ४० तक की बात है, आठ से लेकर दस फार्म तक की पैपरबैक पुस्तकों पर दुअन्नी बनी रहती थी, और मोल भाव करने पर पटरी विक्रेता से वह छह या सात पैसे में भी मिल जाती थी।

सन् १९५३ ईस्वी में जब आर्थिक मजबूरियों के कारण मैं जासूसी उपन्यास लेखक बना तो पाकिस्तानी लेखक इब्ने सफ़ी की धूम थी। युद्ध काल में एम. एल. पाण्डेय भी खासे प्रसिद्ध हुए थे, युगल किशोर पाण्डेय उसी प्रकाशक के यहां लिखते थे जिसके यहां मैंने लिखना शुरू किया।

परन्तु मैं बहुत अधिक जासूसी साहित्य से तब परिचित नहीं था (आज भी नहीं हूँ), ज्यों-ज्यों मैंने परिचित होने का यत्न किया यह जाना कि माल मिलावट का है, देसी नहीं है।

खोज जारी रही और ·····।

नया रास्ता मिल गया ।

मैंने अपने आपको दुर्गाप्रसाद खत्री ने जहाँ कलम रक्खी वहां से शुरु किया । मैंने निश्चय किया कि मेरे जासूसी उपन्यासों का परिवेश भारतीय रहेगा, अन्तर्राष्ट्रीय कथानक होने पर दृष्टिकोण भारतीय रहेगा ।

मैं समझता हूँ कि मैं अपने उद्देश्य में सफल रहा । मैंने अपने आदर्श नायक राजेश की रचना की जो पहली पीढ़ी ने खूब पसन्द किया ।

फिर मैंने अपने दूसरे पात्र जगत की रचना की जो एक ठग है, बुराइयों से भरपूर है, फिर भी बहुत सी बुराइयों के बावजूद उसके जीने के कुछ सिद्धान्त हैं ।

मेरे वयोवृद्ध पात्र विलियम कृष्ण एक प्रकार से मेरे उस आक्रोश की प्रतिक्रिया है जो मेरी ही नहीं विश्व की जनता का युद्ध अपराधी वैज्ञानिकों के प्रति है—उन वैज्ञानिकों के प्रति जिन्होंने हमें विनाश के हथियार अविष्कृत करके दिये हैं ।

काहिरा का ताऊ, रूसी बागारोफ, और फ्रान्स की जासूस लिली मेरी विश्वबन्धुत्व की भावना के प्रतीक हैं ।

जब मुझे सरकारी भ्रष्टाचार के विषय पर कुछ लिखना होता है तो उसके लिए उपयोगी है मेरा पात्र जगन ।

मेरे पात्र गोपाली अब रिटायर्ड हैं, परन्तु पुरानी रियासतों के किस्से मैंने उन्हीं के माध्यम से कहे हैं ।

मेरा यह प्रयत्न होता है कि मैं नई घटनाओं पर उपन्यास लिखूँ । जब बँगला देश का संघर्ष चल रहा था तब मैंने 'इधर रहमान और उधर बेईमान' लिखा पश्चिमी मोर्चे पर भी मेरा उपन्यास 'कयामत के दिन' प्रकाशित हो चुका है ।

इस प्रकार भारत में जासूसी साहित्य पर अपना पक्ष मैंने प्रस्तुत कर दिया ।

यूँ अन्य लेखकों और उनकी रचनाओं से मैं परिचित हूँ। जैसे—वेद प्रकाश काम्बोज, चन्दर (असली) एस. एन. कवँल, सुरेन्द्र मोहन पाठक, दुर्गाशंकर सत्यार्थी इत्यादि। परन्तु अगर मैं इनकी तारीफ करूँगा तो कहा जाएगा कि मैं अपने वर्ग के लेखकों का विज्ञापन करता हूं, बुराई करूँगा तो मेरी बिरादरी ही मुझसे नाखुश होगी। इसीलिए इनके बारे में या तो यह खुद कहें—या कोई और कहें।

यूँ विज्ञापन की दुनिया में—कर्नल, मेजर, कैप्टेन, लैफ्टीनेन्ट नामों से भी जासूसी उपन्यास लेखक विज्ञापित होते हैं। परन्तु यह वास्तविक लेखक नहीं—प्रकाशकों के रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क हैं और इन नामों के प्रकाशक जरुरतमन्द लेखकों का शोषण करता है, सो इस विषय का तो जिक्र ही बेकार है।

(राउन्ड टेबल से)